https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

एन एल आर पी-१२ से संबंधति आवर्तक फीवर (बुखार, ज्वर)

के संस्करण 2016

3. दैनकि जीवन

3.1 इस बीमारी से माता-पति का दैनकि जीवन कैसे प्रभावति होता है?

बार-बार बुखार आने की वजह से बच्चे और माता-पति के दैनकि जीवन पर असर पड़ सकता है। कई बार बीमारी का पता चलने के लिए काफी समय लग जाता है जसिकी वजह से यह समस्या मनोवैज्ञानकि हो जाती है। कई बार बच्चों पर कई तरह की चकित्सा प्रक्रयिा बेवजह होती है।

3.2 स्कूल का क्या होगा?

बीमार बच्चों का स्कूल जाना बंद नहीं करना चाहएि। ऐसा हो सकता है कि बार बार बीमारी का दौरा पड़ने से बच्चे को स्कूल जाने में समस्या हो। इसलएि यह ज़रूरी है कि बच्चे के शक्षिकों को इस बीमारी की पूरी जानकारी हो। ऐसा करने पर वे बच्चे की सारी ज़रूरतों पर ध्यान दे सकेंगे। इससे बच्चे की पढ़ाई पर वपिरीत असर नहीं होगा और वह अपने मत्रिों एवं वयस्कों द्वारा स्वीकारा और सराहा जाएगा। पेशेवर दुनयिा में भवष्यि में एकीकरण करने के लिए ऐसा करना बहुत जरूरी है।

3.3 खेल-कूद के बारे में क्या राय है?

खेल-कूद हर बच्चे के जीवन का एक महत्वपूर्ण हसि्सा है। इस चकित्सिावधान का उद्देश्य यह है कि बच्चे अपनी ज़िंदगी जहाँ तक हो सके, सामान्य रूप से जएिँ और अपने आप को दूसरे बच्चों से अलग न समझें। इसलएि सहनशीलता के अनुसार सभी कार्यकलाप कएि जा सकते हैं। लेकनि, बीमारी के दौरान शारीरकि गतविधि को सीमति रखना होगा और समय-समय पर आराम भी करना होगा।

3.4 क्या खान-पान पर कोई पाबंदी है?

खान-पान पर कोई खास पाबंदी या परहेज नहीं है। बच्चे के आयु के अनुसार पौष्टकि आहार

खाना ज़रूरी है। खाने में उचित मात्रा में प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन का होना भी आवश्यक है। ज़रूरत से ज़्यादा खाना नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह देखा गया है कि कॉर्टीकोस्टेराइड्स लेने वाले मरीज़ों को दवाई की वजह से ज़्यादा भूख लगती है।

3.5 मौसम के कारण क्या रोग पर कोई प्रभाव पड़ता है?

ठंडी या जाड़े से बीमारी के लक्षण शुरु हो सकते हैं।

3.6 क्या बच्चे को टीके लगाए जा सकते हैं?

जी हॉ, बच्चे को टीके ज़रूर लगाए जा सकते हैं। लेकिन जीवित तनु टीके देने के पहले चिकित्सक/डॉकटर को बीमारी के बारे में जानकारी देनी होगी क्योंकि ऐसे टीके चिकित्सा विधान से असंगत हो सकते हैं।

3.7 यौन जीवन, गर्भधारण और परिवार नियोजन के बारे में क्या किया जा सकता है?

इस विषय पर आज तक कोई लिखित जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन, सामान्य नियमानुसार अन्य बीमारियों की तरह गर्भधारण के पूर्व ही इन दवाइयों के भ्रूण पर होनेवाले असर के बारे में सोच लेना उत्तम है।